Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER | CANDIDATE NUMBER

0123456789

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **For Examination from 2019**

SPECIMEN PAPER

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name in the spaces at the top of this page.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

This document consists of **14** printed pages and **2** blank pages.

CAMBRIDGE
International Examinations

© UCLES 2016

अभ्यास 1

'माया के इशारे पर न्यूयॉर्क में चलती हैं टैक्सियाँ' आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

न्यूयॉर्क की टैक्सी चालक संगठन से शुरुआत करने वाली माया पटेल, चाहे कोई प्रदर्शन हो या कोई और कार्यक्रम हमेशा भारतीय महिलाओं की परंपरागत वेशभूषा में नज़र आती हैं। वे 38 वर्षीय, दुबली पतली, करीब 5 फुट लंबी हैं और नर्म आवाज़ में बोलती हैं। लेकिन उन्होंने टैक्सी चालकों के हित में आवाज़ उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। गुजरात के सूरत शहर के पास एक छोटे से गांव बदेली में जन्मी माया पटेल सिर्फ छह वर्ष की आयु में ही अपने माता-पिता और दो बड़े भाइयों के संग अमरीका आकर बस गईं थीं।

माया पटेल ने कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ही न्यूयॉर्क शहर के टैक्सी चालकों की मदद करना शुरू कर दिया था। न्यूयॉर्क में करीब-करीब 50 हज़ार टैक्सियाँ चलती हैं। टैक्सी चालन का यह रोज़गार भी करोड़ों डॉलर का उद्योग बन चुका है। लगभग 10 लाख लोग रोज़ाना टैक्सी का प्रयोग करते हैं और इसीलिए शहर की अर्थव्यवस्था में भी टैक्सी चालकों का बड़ा योगदान रहता है।

अधिकतर चालक बहुत ज़्यादा शिक्षित नहीं होते और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी सीमित होता है। जिससे उन्हें कोई और काम ढूंढने में भी मुश्किल होती है। माया उत्साह के साथ बताती हैं, "मुझे तो भारत, पाकिस्तान और बंग्लादेश से आए इन टैक्सी चालकों को साथ में काम करते देख बहुत खुशी होती है। सब एक दूसरे की मदद करने को तैयार रहते हैं।" लेकिन टैक्सी चालकों को टैक्सी चलाने से पहले ही टैक्सी हासिल करने के लिए ही हज़ारों डॉलर भरने पड़ते हैं। इन मुश्किलों का ज़िक्र करते हुए माया पटेल बताती हैं, "टैक्सी चालकों का शोषण किया जाता है। उनके पास कोई लगातार कमाई का ज़रिया नहीं होता, कोई स्वास्थ्य बीमा नहीं होता। उनको कोई छुट्टी नहीं मिलती। उनको कई मामलों में हिंसा का निशाना बनाया जाता है।"

इन्हीं मुश्किलों को उजागर करने के लिए माया पटेल ने 1998 में एक हड़ताल की घोषणा की। न्यूयॉर्क में उस दिन पूरे शहर में टैक्सी की हड़ताल हुई। उस हड़ताल के सफल होने के बाद माया पटेल खबरों में छा गईं। लेकिन वह मानती हैं कि इन टैक्सी चालकों द्वारा अपनाए जाने में महिला होने के कारण उन्हें कुछ समय लगा। वे कहती हैं कि शुरू में कई ड्राइवर यह समझते थे कि वह कोई पत्रकार या किसी संस्था की कार्यकर्ता हैं और कई लोग उन्हे गम्भीरता से नहीं लेते थे। लेकिन वे कहती हैं कि उन्होंने अपना काम पूरे जोर-शोर से जारी रखा और धीरे-धीरे टैक्सी चालक, शहर के अधिकारीगण और यहां तक की पत्रकार भी उन्हें पूरी गंभीरता से लेने लगे।

1 माया पटेल को किस गतिविधि में देखा जा सकता है?

..... [1]

2 न्यूयॉर्क की अर्थव्यवस्था में टैक्सी उद्योग की भूमिका अहम क्यों है?

..... [1]

3 टैक्सी चालकों को किस तरह की ***आर्थिक*** मुश्किलों का सामना करना पड़ता है?
कोई दो बातें लिखिए।

- .....
- ..... [2]

4 माया पटेल का नाम न्यूयॉर्क के समाचार पत्रों में क्यों छपा?

..... [1]

5 टैक्सी चालकों द्वारा माया को अपना नेता स्वीकार करने में अधिक समय क्यों लगा?

..... [1]

6 आलेख के किन दो वाक्यांशों से पता चलता है कि माया पटेल ने टैक्सी यूनियन के लिए पूरी दृढ़ता से कार्य किया?

- .....
- ..... [2]

[Total: 8]

अभ्यास 2

भारत में रहने वाली एक जापानी महिला के बारे में छपे इस लेख को ध्यान से पढ़ें। प्रश्न 7 से 15 का उत्तर देने के लिए उनके नीचे दिए गए अनुच्छेदों (A से D) में से सही अनुच्छेद चुन कर उसके सामने के कोष्ठक में सही का निशान लगाएँ।

A लगभग एक दशक पहले जब जापान में भारतीय फिल्में धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही थीं, तो यही फिल्में गोतो सान को जापान से भारत खींच लाईं और उन्हें यहीं का बना दिया। उनका अपने देश आना-जाना होता है, लेकिन असली ठिकाना भारत है। भारत और गोतो सान ने एक-दूसरे को अपना लिया है। जापान उन्हें खींचता ज़रूर है, पर भारत उनको जाने नहीं देता। घूमने की बेहद शौकीन गोतो सान ने एक दशक में लगभग पूरा भारत नाप लिया है। रोज़ी-रोटी के लिए उनका ठिकाना दिल्ली है लेकिन मन बनारस में ही रमता है। हिंदी उन्होंने यहीं आकर सीखी। पहले उन्हें केवल जापानी आती थी, अब उनकी बोलचाल की भाषा हिंदी है। कुछ साल पहले अंग्रेज़ी सीखने लंदन गईं, लेकिन वहाँ एक अनुभव ने उनका भारत प्रेम और गाढ़ा बना दिया। वह वाकया वे नहीं भूल पातीं।

B रात का वक़्त था और लंदन का मौसम भी बहुत ख़राब था। अनजान शहर में अपने ठिकाने पर पहुँचने में कितना समय लगेगा, इसका अंदाज़ा लगा पाना मुश्किल था। रास्ते में उन्हें एक भारतीय रेस्तराँ दिखाई पड़ा, जिसका शटर गिरने जा रहा था। तभी उसमें दाखिल होते हुए उन्होंने हिंदी में पूछा - 'कुछ खाने को मिलेगा?' रेस्तराँ के मालिक सरदार जी थे, जिन्होंने ताड़ लिया कि महिला पूर्वोत्तर भारत की होगी। उन्होंने पूछा कि नॉर्थ-ईस्ट के किस राज्य की हो? जवाब मिला कि वे जापानी हैं और दिल्ली में रहती हैं। सरदारजी इतने ख़ुश हुए कि उनके लिए फटाफट कुछ भोजन तैयार कराया और हिंदी में बात करने के कारण बिल में करीब पच्चीस फ़ीसद की कटौती भी कर दी। गोतो सान बताती हैं कि कोई भारतीय ही ऐसा कर सकता है। यदि कोई अभारतीय रेस्तराँ होता तो उसका मालिक ज़्यादा से ज़्यादा कुछ खाने को देता, पर वह बिल बिल्कुल कम नहीं करता, जैसा कि उनका अब तक का अनुभव रहा है। ऐसी घटनाएँ भारतीयों को बाक़ी देशों के लोगों से अलग करती हैं।

C दिल्ली को अपना ठिकाना बनाने पर उन्होंने सबसे पहले एक ग़ैर-सरकारी संगठन में नौकरी की थी जो भारत-जापान संबंधों के बीच मज़बूती के लिए काम करता है। उत्तर पूर्व भारत को छोड़ कर वे लगभग पूरा भारत घूम चुकी हैं। कुछ समय पहले उन्होंने अपना कारोबार शुरू किया है। जापान से खाने-पीने के सामान का आयात कर उसे दिल्ली स्थित जापानी रेस्तराँ में पेश करने लगी हैं। इसमें उनका हाथ बंटाते हैं उनके जापानी पति, जिनसे उन्होंने हाल में शादी की है। उनके मन में भारतीय स्वाद इस कदर बस चुका है कि भारत के विविधतापूर्ण लज़ीज़ और मसालेदार भोजन का नाम लेते ही उनका चेहरा खिल उठता है। भारत की कड़क मसाला चाय उन्हें बहुत पसंद है। भले ही यहाँ 'ग्रीन चाय' का फ़ैशन बढ़ रहा हो, लेकिन उनको कभी जापानी 'ग्रीन चाय' पीते नहीं देखा।

D जापान जैसे समय के पाबन्द देश की नागरिक गोतो सान को इस बात से बहुत झुंझलाहट होती है जब भारत में कभी-कभी समय पर काम नहीं होता । गोतो सान को बहुत आक्रोश आता है जब लोग उन्हें चीनी समझ बैठते हैं। कुछ साल पहले एक बार लाजपत नगर जाने के लिए वे एक प्राइवेट बस में सवार हुईं और लाजपत नगर कह कर कंडक्टर की तरफ एक नोट बढ़ा दिया, जिसने सही टिकट न काट कर ज़्यादा पैसे काट लिए। वे उखड़ गईं और हिंदी में बताया कि लाजपत नगर का असल किराया कितना है। कंडक्टर भौचक रह गया ! एक यात्री ने ताना कसा कि चीनी होकर हिंदी बोल रही है। गोतो सान ने ताव में आकर कहा कि वे चीनी नहीं, जापानी हैं। यात्रियों को बड़ा अफ़सोस हुआ और सबने उनके प्रति आदर का भाव दिखाया कि वे हिंदी बोल रही हैं। बॉलीवुड फ़िल्में उनका प्रिय शगल हैं, क्योंकि इन फ़िल्मों ने ही उनका भारत से परिचय कराया था और काफ़ी हद तक हिंदी भी सिखाई।

© UCLES 2016

नीचे दिए गए वक्तव्यों (7–15) को पढ़िए तथा कोष्ठक में टिक का निशान लगा कर बताइए कि कौन सा अनुच्छेद (A–D) किस वक्तव्य से सम्बंधित है।

उदाहरण:

कौन सा अनुच्छेद

बताता है कि गोतो सान लगभग सारा भारत घूम चुकी हैं

A [✓] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ]

7 बताता है कि गोतो सान के मुँह से हिंदी सुनकर लोग हैरत में पड़ जाते हैं।

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

8 बताता है कि भारत से अगाध प्रेम होने पर भी गोतो सान को एक बात से बहुत नाराज़गी होती है

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

9 बताता है कि दिल्ली गोतो सान का मनपसंद शहर नहीं है।

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

10 बताता है कि गोतो सान चीनी समझे जाने पर बहुत क्रोधित होती हैं

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

11 सिद्ध करता है कि गोतो सान भारतीय आतिथ्य की भावना से बहुत प्रभावित हुईं।

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

12 बताता है कि गोतो सान स्वयं को देश प्रेम और भारत प्रेम के बीच बँटा हुआ पाती हैं।

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

13 बताता है कि गोतो सान की अभिरुचियाँ बदल गई हैं।

A [ ] **B** [ ] **C** [ ] **D** [ ] [1]

© UCLES 2016

14 संकेत देता है कि गोतो सान देखने में पूर्वोत्तर भारत की लगती हैं।

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

15 बताता है कि गोतो सान ने हिंदी कैसे सीखी

A ☐ **B** ☐ **C** ☐ **D** ☐ [1]

[Total: 9]

BLANK PAGE

अभ्यास 3

'सोशल मीडिया:किशोर-किशोरियों और अभिभावकों के दृष्टिकोण' आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए|

किशोर-किशोरियों के लिए सोशल मीडिया संवाद का लोकप्रिय साधन बन गया है| फेसबुक, ट्विटर, वाट्सऐप्प आदि द्वारा दोस्तों के साथ अपने निजी अनुभवों को बांटे बिना जैसे उन्हें चैन नहीं मिलता| ऐसा लगता है कि इसके बिना जीने का अनुभव अधूरा ही रह जाएगा।

सोशल मीडिया द्वारा अपनी अधिकाधिक व्यक्तिगत जानकारी को बांटने वालों की उम्र उत्तरोत्तर छोटी और संख्या बढ़ती जा रही है| इसके साथ जगतजाल पर उनकी सुरक्षा का खतरा भी बढ़ रहा है| दुनिया के किसी भी कोने में रहने वालों से दोस्ती कर पाने की सुविधा जोख़िम से खाली नहीं है| यह भय हमेशा बना रहता है कि आप जिसके साथ जानकारी बांट रहे हैं क्या कोई अनजान व्यक्ति उसे देख सकता है अथवा नहीं। इसके अलावा आप नहीं जानते कि आप किससे बात कर रहे हैं।

यामा अपने माता, पिता और भाई, राजीव के साथ कानपुर शहर में रहती है| यामा एक होनहार छात्रा है जो इस वर्ष 10+ की परीक्षा की तैयारी कर रही है| घर से स्कूल की दूरी को वह प्रतिदिन साइकिल से पूरी करती है| किसी कारण से यदि उसे घर लौटने में देरी हो जाए तो उसकी माँ, प्रभा उसकी कुशलता की चिंता से व्याकुल हो जाती है| इस चिंता से बचने के लिए प्रभा ने यामा को उसके पंद्रहवे जन्मदिन पर स्मार्टफोन खरीद दिया।

स्मार्टफोन पा कर तो जैसे यामा की दुनिया ही बदल गई! यह एक ऐसी नई दुनिया है जहाँ वह अपने विचारों और मनोभावों को, जो कभी माता पिता के साथ बांटने की कल्पना तक नहीं कर सकती, बेखटके व्यक्त करने को स्वतंत्र है| उसे सोशल मीडिया में रमने का ऐसा चस्का लगा कि स्कूल से लौटने के बाद होमवर्क करके अपने छोटे भाई और पड़ोस के बच्चों के साथ खेलने वाली यामा अब घर लौटने पर सीधे अपने कमरे में स्मार्टफोन पर जुट जाती है| प्रभा के मन में हमेशा यह चिंता बनी रहती है कि कहीं यामा पढ़ाई में ना पिछड़ जाए, और उससे भी अधिक यह आशंका कि वह किसी अवांछित व्यक्ति से चैट न कर रही हो| उसकी फेसबुक की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए प्रभा एक नकली नाम से यामा की फेसबुक मित्र बन गई| अपनी बेटी के निजी संदेश को उसे बताए बिना जांचना कभी-कभी उन्हें बुरा लगता है, लेकिन उनका सोचना है कि इस तरह वे अपनी बेटी को सोशल मीडिया के संभावित खतरों से सुरक्षित रख सकती हैं|

यामा सोचती है कि माता पिता को अपने बच्चों पर विश्वास करके सोशल मीडिया पर उनके व्यक्तिगत एकाउंट में दख़ल नहीं देना चाहिए|

पंद्रह वर्षीया प्रीती अपनी एकल माँ शांति और छोटी बहन, काजल के साथ मुम्बई शहर में रहती है| शांति सुबह साढ़े सात बजे प्रीती और काजल को अपने पीछे से स्कूल जाने के लिए घर पर छोड़ कर काम करने के लिए निकल जाती हैं| काजल के साथ पैदल चल कर स्कूल पहुँचने के बाद अपने स्मार्टफोन से माँ को फोन करना प्रीती की दिनचर्या का भाग है| प्रीती ने फेसबुक पर ढेर सारे मित्र बनाए हैं| शांति प्रीती की सोशल मीडिया की गतिविधियों पर निगरानी रखना जरूरी नहीं समझतीं| उनका सोचना है कि सोशल मीडिया बढ़ती उम्र के बच्चों को अपने अनुभव से सीखने का अवसर देता है| छोटे बच्चे जब पहली बार खड़े होकर चलना सीखते हैं तो शुरुआत में लड़खड़ा कर गिरते हैं और ऐसे में कभी-कभी उनके घुटने भी छिल जाते हैं| पर, माता पिता उन्हें चलने से रोकते नहीं| उनका कहना है, ''सोशल मीडिया बाहरी दुनिया से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है जिससे हमें अपने बच्चों को वंचित नहीं रखना चाहिए| हम उम्र के साथियों से मनपसंद बातें करना बढ़ती उम्र के बच्चों की एक स्वाभाविक ज़रूरत है| सोशल मीडिया में विचरण करते समय सम्भव है कि वे कोई अवांछित साइट खोल लें या किसी अवांछित व्यक्ति से चैट कर लें| यह अनुभव उन्हें भविष्य में सतर्क रहना सिखायेगा| प्रीती के स्कूल में ई-सेफ्टी के बारे में बताया गया है| हमें अपने बच्चों के विवेक पर विश्वास करके उन्हें अपनी गलतियों से सीखने का मौका देना चाहिए| उन पर अविश्वास करने से माँ-बेटी के सम्बन्ध में दूरी आ सकती है|''

© UCLES 2016

प्रीती को खुशी है कि माँ उसका विश्वास करके उसके फेसबुक संदेशों में ताकझांक नहीं करती है| उसका सोचना है कि माता पिता के लिए बच्चों की सोशल मीडिया की गतिविधि पर निगरानी रखना तब तक ठीक है जब तक वे छोटे-छोटे मसलों की छानबीन करके किसी गलत निर्णय पर ना पँहुचें|

'सोशल मीडिया:किशोर-किशोरियों और अभिभावकों के दृष्टिकोण' आलेख के आधार पर नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक (16–19) के अंतर्गत संक्षिप्त नोट लिखें|

16 सोशल मीडिया की उपयोगिता

- .....
- ..... [2]

17 सोशल मीडिया से सम्बन्धित खतरे

- .....
- .....
- ..... [3]

18 संतान की सोशल मीडिया में सक्रियता पर माता-पिता की प्रतिक्रिया

- .....
- ..... [2]

19 माता-पिता के व्यवहार के प्रति किशोर-किशोरियों के विचार

- .....
- ..... [2]

[Total: 9]

अभ्यास 4 में आप अपने नोट्स के आधार पर उसका सारांश लिखेंगे|

अभ्यास 4

20 अभ्यास 3 के आलेख में किशोर-किशोरियों की सोशल मीडिया में सक्रियता के प्रति माता-पिता के दो भिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन है|

अभ्यास* 3 *में अपने बनाए नोट्स के आधार पर उन अलग-अलग दृष्टिकोणों का सारांश लिखें|
आपका सारांश अधिकतम 100 **शब्दों में** होना चाहिए|

आप यथासंभव अपने शब्दों में लिखें|

आपको *अंतर्वस्तु के लिए* अधिकतम 4 अंक और ***सटीक एवं संक्षिप्त भाषा-शैली के लिए*** अधिकतम 6 अंक दिए जाएंगें|

© UCLES 2016

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

.... [10]

[Total: 10]

अभ्यास 5

21 आपके शहर में एक नया रेस्टोरेंट खुला है। अपने दोस्त को ई-मेल लिखकर बताइए कि रेस्टोरेंट कैसा था? आपके ई-मेल में निम्नलिखित बातें सम्मिलित होनी चाहिए।

- रेस्टोरेंट का विवरण
- आपने अपने खाने में क्या मंगवाया
- रेस्टोरेंट के बारे में आपके मत

आपका ई-मेल *लगभग* 120 शब्दों *में* होना चाहिए।

आपको 3 अंक अंतर्वस्तु के लिए और 5 अंक ***सटीक*** भाषा एवं शैली के लिए दिए जाएंगे।

© UCLES 2016

[8]

[Total: 8]

© UCLES 2016

अभ्यास 6

22 क्या स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन बसता है?

आप कहाँ तक इस मत से सहमत हैं। अपने विचारों को समझाते हुए स्कूल पत्रिका के लिए अपना लेख **लगभग 200** शब्दों में लिखिए। आपका लेख विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

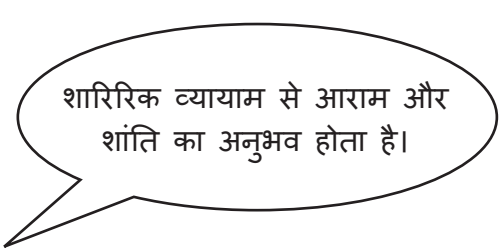

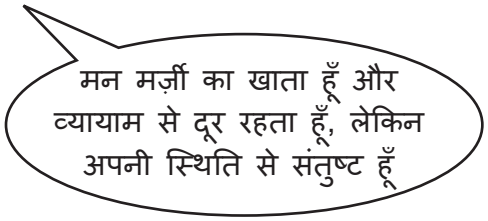

ऊपर दी गई टिपप्णियां आपके लेखन के लिए दिशा प्रदान कर सकती हैं। इनके माध्यम से आप अपने विचारों को विस्तार दीजिए।

लिखित प्रस्तुति पर अंर्तवस्तु के लिए 8 अंक तक और सटीक भाषा के लिए भी 8 अंक तक दिए जाएंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

© UCLES 2016

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

.... [16]

[Total: 16]

© UCLES 2016

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2016